UGC SPONSORED TWO DAYS NATIONAL SEMINAR

ON **14-15** FEB 2011

AN AGENDA FOR POLITICAL REFORMS IN INDIA

Research paper Submitted –**Jitendra vyas**(research scholor)

Subject of **ASTROLOGY**

UNIVERCITY -Dep. OF Sanskrit, J.N.V. Jodhpur,

SEMINAR CORDINATER – Dr. SOHAN LAL MEENA

भारतीय राजनीति की भविष्य की दशा व दिशा विचार.....एक ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य।

ज्योतिष भारतीय मनीषियों के ही नहीं अपितु विश्व भर के सर्वमान्य व प्राचीनतम **ग्रंथ[1]है**। ज्योतिष वेदांग[2] है। छः प्रकार के वेदांग है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द व ज्योतिष। पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक "वैदिक सम्पति"[3] में अकाट्य प्रमाणों व तर्को के साथ यह बताया है कि विश्व की सभी समस्याओं का समाधान वेदांग ज्योतिष में ही अर्न्तनिहित है जिसमें राजनीतिक समस्याओं व उनसे सम्बन्धित क्षेत्र भी है क्योंकि वेद में कहा गया है कि–

ग्रहाधीनं जगत्सर्व, ग्रहाधीनं नरावराः ।
कालज्ञानं ग्रहाधीनं, ग्रहाकर्मफल प्रदाः ।।[4]

अर्थात् सम्पूर्ण चराचर जगत् ग्रहों के अधीन हैं, नर-नारी, पशु-पक्षी भी ग्रहों के अधीन हैं। काल का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन है तथा हमारे किये गये कर्मो का फल भी ग्रहों के द्वारा ही हमें मिलता है। अतः ज्योतिष विषय की भूमिका प्रत्येक विषय में अपेक्षित है। चाहे वह विषय राजनीति विज्ञान ही क्यों ना हो क्योंकि ज्योतिष भी अपने आप में एक सम्पूर्ण विज्ञान[5] है। इसी ज्योतिष शास्त्र द्वारा हम भारत वर्ष की आधुनिक व भविष्य में होने वाले राजनीतिक घटनाक्रम की विस्तृत विवेचना कर सकते है।

www.drjitendraastro.com

भारतीय राजनीति में वेदांग ज्योतिषानुसार भारत वर्ष की दशा-दिशा विचार का ज्योतिषीय परिपेक्ष्य प्रस्तावित है। उसी परिपेक्ष्य को स्वतंत्र भारत की कुण्डली के जन्मांग व नवमांश अनुसार जानने का प्रयत्न किया जा सकता है। भारत **15** अगस्त, **1947** को स्वतंत्र हुआ। ज्योतिषानुसार भारत की स्वतंत्रता के समय वृषभ लग्न[6] (स्थिर लग्न) तथा मीन राशि का नवमांश था तथा पुष्य नक्षत्र का प्रथम चरण[7] भी था, तत्कालीन गवर्नर जनरल माउंटबेटन ने पं. जवाहर लाल नेहरू को वृषभ लग्न में ही भारतवर्ष के प्रथम प्रधानमंत्री की शपथ दिलाई[8]। राष्ट्र की राष्ट्रीय ज्योतिष का किस पटल पर निरूपण करना **"मेदनीय ज्योतिष"** कहलाता है। किसी भी जन्मांग में **12** भाव होते है, इसी प्रकार स्वतंत्र भारत की कुण्डली में भी **12** भाव निरूपित किये गये है। इन्ही बारह भावों से प्रत्येक भाव राष्ट्र की विभिन्न स्थितियों पर प्रभाव डालता है।

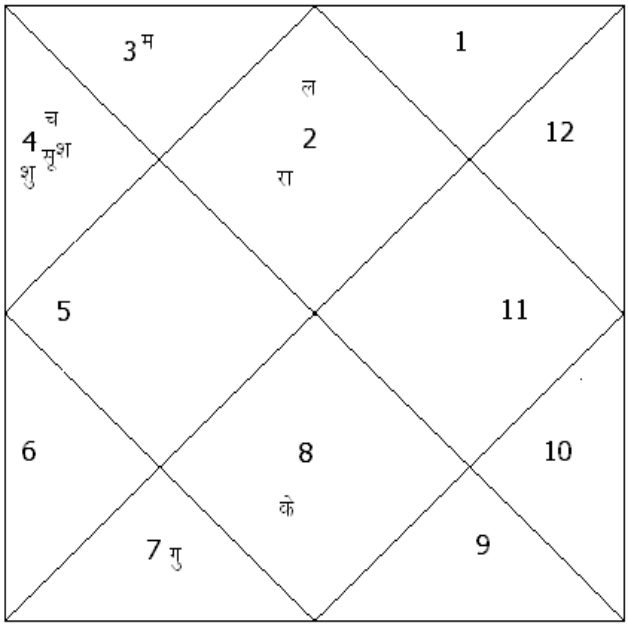

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

प्रथम भाव- लग्न राष्ट्र के नेतृत्व व नेतृत्व क्षमता, व्यक्तित्व, राज्यों की दशायें, जनमानस का स्वास्थ्य एवं मंत्रिमण्डल की परिस्थितियाँ इत्यादि को निर्देशित करता है। इसी प्रकार **द्वितीय भाव** से राज्यों का राजस्व अर्थ, अर्थस्त्रोत जनसाधारण की आर्थिक दशा, आयात-निर्यात व वाणिज्य व्यावसायादि का विचार किया जाता है। **तृतीय भाव** से संचार, वायुयान, रेल इत्यादि। **चतुर्थ भाव** से कृषि संसाधन, उच्च शिक्षा व उच्च शिक्षण संस्थानों को देखा जाता है। **पंचम भाव** से देश के प्रशासक, मनोरंजन क्षेत्र, बाल्य संतति व बल शक्ति देखी जाती है। **षष्ठ भाव** से देश के सीमा विवाद, आक्रमण सोच, क्रय-विक्रय, साझेदारियाँ, राष्ट्रीय नैतिकता, वैदेशिक सम्बन्ध व नारी स्वास्थ्य का विचार किया जाता है। **अष्टम भाव** से राष्ट्र की मृत्यु दर, फैलते असाध्य इत्यादि रोग इत्यादि को देखा जाता है। **नवम भाव** से विकास योजनाएं, न्यायालय, सैलानी स्थल व सैलानी आगमन का विचार किया जाता है। **दशम भाव** से प्रशासनिक वर्ग, संसद, विदेश व्यापार, विद्रोह, अलगाववाद, नक्सलवाद इत्यादि ज्वलंत समस्याओं को देखा जाता है। **एकादश भाव** से एफ. डी.आई., परराष्ट्रों से लाभ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का तथा **द्वादश भाव** से युद्ध सम्बन्धी विचार, षड़यंत्र, अपराध व राष्ट्र के शत्रुओं का विचार किया जाता है[9]। मेदनीय ज्योतिषानुसार स्वतंत्र भारत की कुण्डली देखने पर उसमें नेष्ट व शुभ कुल **103** योग है, परान्नभक्षण योग, स्ववीर्यात धन योग, चंद्रिका योग, देह कष्ट योग, सभाजड़ योग, सत्कीर्ति योग व पूर्णायु योग है। सूर्य-बुध-शुक्र-शनि-चन्द्र का पंचग्रही योग भी कुण्डली में प्रस्तावित है[10]। सारे ग्रह नक्षत्रों के योग देखने से पूर्व राष्ट्र की आयु का विचार किया जाना चाहिए **प्रथम आयु परीक्षीयेत्।।**

www.drjite

भारत वर्ष की सन्निकट पूर्णायु है अर्थात् दीर्घायु योग है, दीर्घायु का तात्पर्य **90** वर्ष से होता है। अतः यह समय स्वतंत्रता के **90** वर्ष तक का है। अतः सन् **2037** तक भारत उपमहाद्वीप सम्भव है। एक होकर किसी अन्य नाम से पहचाना जायेगा तब तक यथावत स्थिति रहेगी। सन् **2009** के अंत से **2015** अतः सितम्बर तक भारत की सूर्य विंशोतरी दशा चलेगी चूंकि स्वतंत्र भारत की कुण्डली में सूर्य चतुर्थेश है। अतः इन **6** वर्षो में एक ओर हरित क्रांति आयेगी तथा उच्च शिक्षा व उच्च शिक्षण संस्थानों में नये आयाम बनेंगे। सूर्य केन्द्रापति होकर पराक्रम भावस्थ है। अतः सूर्य की गजदशा में भारत विश्व महाशक्ति बन जायेगा। सूर्य पहले शुक्र के **20** वर्षीय महादशा थी जिसमें **11** जुलाई, **2002** से शनि की अन्तर दशा थी तब से अब तक भारतीय संविधान में अभूतपूर्व संशोधन हुए[11]। शुक्र में शनि का अन्तर ही संविधान संशोधन का संकेत था उसके पश्चात् बुध की अन्तर दशा में भारत ने अपने आर्थिक सुधार किए क्योंकि द्वितीयेश बुध शुक्र युत है। अतः अब **2015** तक स्ववीर्यार्ब्धन योग है जिसके चलते भारतीय आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सन् 1989 से **2009** तक भारत के समक्ष सभी सीमा विवाद आये लेकिन अब यह अगले **5** वर्षो में शांत हो जायेंगे क्योंकि भारत का मुख्य सीमा विवाद पाकिस्तान से उसकी कुण्डली में मध्यायु योग जो कि **68** वर्ष ही होता है। पाकिस्तान को स्वतंत्र हुए **63** वर्ष हो गये है। अतः पाकिस्तान वर्ष **2015** से **2017** के बीच किसी अन्य राष्ट्र से संचालित हो जायेगा। भारत को समस्त भूमि अधिग्रहित हो जायेगी। इस समस्या को अन्तिम रूप देने का शुभारम्भ कन्या राशि के शनि ने कर दिया है। अदभूत दर्पण नामक ग्रंथ में गर्ग ऋषि ने कहा है[12]।

"काश्मीरं यति नाशं हयरवदलितं विग्रहं
तत्रकुर्याद्रत्नस्यं धातुरूप्यं गजहयवृषभं छागल माहिष च।
कन्यायां सूर्यपुत्रे सकलजन सुखं सग्रहें सर्व धान्यम्।

तत्पश्चात् चन्द्रमा की महादशा आयेगी जो कि तृतीयेश होकर स्वग्रही तथा पराक्रम बढ़ा रहा है। सन् **2015** के पश्चात् पराक्रमी नेतृत्व भारत का शासन करेगा। भारत में संचार क्रांति का अद्भुत युग चलेगा। भारतवर्ष की स्वतंत्र कुण्डली में जब-जब राहु की गजदशा या अंतर दशा आयेगी जो कि अभी चल रही है (सूर्य में राहु) तब-तब राष्ट्र में अराजकता, छत्रभंग, शासन के लिए संघर्ष, रक्तपात, हिंसा, लूटखसोट, प्राकृतिक प्रकोप इत्यादि स्वयं संभव है[13]। यह राहु की अन्तर दशा **30.9.2011** तक चलेगी। राजनीतिक अस्थिरता व प्राकृतिक प्रकोप का विशेष संयोग वर्ष **2011** में है क्योंकि इस वर्ष **4** खग्रास व खण्डग्रास ग्रहण है[14]।

www.drjitendraastro.com

REFRENCES

1. भारतीय ज्योतिष का इतिहास/डॉ. गोरख प्रसाद/प्रकाशन 1974/उ.प्र. शासन, लखनऊ/ पृ. 10
2. पाणिनी शिक्षा/ श्लोक 41-42
3. वैदिक सम्पति /प्रका. 1930/ प्रकाशक कच्छ केसल, बम्बई/पृ.90
4. ज्योतिष मार्तण्ड/अज्ञात दर्शन कार्यालय, जोधपुर/प्रकाशन 2005
5. दैनिक भास्कर/दिनांक 4-2-2011,जोधपुर/पृ.1
6. वेंकटेश्वर शताब्दि पंचाग, पुणे
7. वृहज्जातकम्/राशिभेदाध्याय/श्लोक 6/पृ.5
8. ज्योतिष विज्ञान निर्जरी/डॉ. विनोद शास्त्री/प्रकाशक -राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर/पृ.82
9. भारतीय फलित ज्योतिष संहित/पं. केवल आनंद जोशी/प्रकाशन-2006/ प्रकाशक-मनोज पब्लिकेशन/पृ. 248-254
10. ज्योतिष विज्ञान निर्जरी/पृ.83
11. ज्योतिष विज्ञान निर्जरी/पृ.83
12. अद्‌भुत दर्पण (मूल) गर्ग ऋषि
13. ज्योतिष विज्ञान निर्जरी/पृ.83
14. निर्णय सागर पंचाग/नीमच (म. प्र.)/संवत् 67 व 68

www.drjitendraastro.com